International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 106-107

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 106-107
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 22-04-2015
Accepted: 26-05-2015

दुर्गा उपाध्याय
शोध छात्राा, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जीना परिसर, अल्मोड़ा

पुष्पा अवस्थी
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जीना परिसर, अल्मोड़ा

Correspondence
दुर्गा उपाध्याय
शोध छात्राा, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जीना परिसर, अल्मोड़ा

आधुनिक महाकाव्य उत्तरनैषधीयचरितम् में दमयन्ती का आदर्श नारी चरित

दुर्गा उपाध्याय, पुष्पा अवस्थी

प्राचीन काल से ही भारत में नारी का समाज में सर्वोत्तम स्थान था। इन नारियों में दमयन्ती हिन्दू समाज के स्त्रियों के लिए आदर्श एवं पथ–प्रदर्शक है। इसके समान पतिव्रता, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, सदाचारी, सेवाभावी, सौम्यता आदि गुण अन्यत्रा कम ही मिलते हैं। गोस्वामी पं0 भैरव गिरि शास्त्राी प्रणीत उत्तरनैषधीयचरितम् में नायिका दमयन्ती के जीवन चरित का जो आदर्श एवं अनुपम उदाहरण कवि ने जगत के सम्मुख प्रस्तुत किया है, वह अन्यत्र कम ही देखने को मिलता है।

संस्कृत काव्य जगत में बृहत्त्रायी के अन्तर्गत आने वाले 'नैषधीयचरितम्' के समानार्थी उत्तरनैषधीयचरितम् के रचनाकार कवि गोस्वामी पं0 भैरव गिरी शास्त्री जी का जन्म बिहार के सारण जिलान्तर्गत कुमना ग्राम में ईस्वीय सन् 1901 में हुआ था। इनकी मृत्यु सन् 1974 में हुई। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा घर पर करने के बाद कलकत्ता से काव्यतीर्थ एवं सांख्य दर्शन की शिक्षा प्राप्त की, फिर बाद में बिहार संस्कृत शिक्षा समिति से आयुर्वेदिक परीक्षा उत्तीर्ण की। लेखक के रूप में इनकी पहली रचना 'मारुति विजय' दूसरी 'सरयू शतकम्' जो अभी अप्रकाशित है। तीसरी रचना उत्तरनैषधीयचरितम है[1], जो संस्कृत महाकाव्य परम्परा में अपना विशेष स्थान रखती है।

आधुनिक महाकाव्य उत्तरनैषधीयचरितम् 22 सर्गों में विभक्त है। इसमें नल–दमयन्ती के जीवन भाग का उत्तरकाथानक एवं उनके पौत्र चंद्रागद का सिंहासनारुढ़ होने तक की कथा वर्णित है। कथावस्तु का स्रोत महाभारत में वर्णित नल पर्व ;59–78 अध्याय एवं स्कन्दपुराण के ब्राहमणखण्ड अन्तर्गत ब्रहमोतरखण्ड है।

उत्तरनैषधीयचरितम् में कवि ने दमयन्ती को पतिव्रता नारी के रुप में चित्रित किया है। वह नल के सुख–दुख की सहभागी है। नल के भाई पुष्कर द्वारा नल को राज्य से निष्कासित कर देने पर दमयन्ती नल के साथ वन जाने का निर्णय लेते हुए कहती है –

''सुहृत्, सती, धर्म इति त्रायः सदा सहैकशो तुरीयया''[2]

अर्थात मित्र, सती नारी, धर्म और धैर्य इन चारों की परीक्षा विपत्ति के समय में ही होती है। वन में अनेकों कठिनाईयों का सामना करते हुए चेदिराज्य में राजमाता के समक्ष अपेन पतिव्रत का पालन करते हुए इस प्रकार कहती है –

''मैं किसी अन्य पुरुष का जुठा अन्न, जल ग्रहण नहीं करुँगी, न किसी का पैर धेऊँगी, किसी अन्य पुरुष से बातें करना मुझे अच्छा नहीं लगेगा। यदि कोई पुरुष मेरी याचना करे तो वह मृत्युदण्ड का भागी हो। पति को ढूँढने के लिए जो ब्राहमण भेजे जाय, उन्हें मैं स्वयं सन्देश देकर भेज सकूं।[3] वन में अनेकों विपत्तियों के आने पर भी वह अपने पतिव्रत का पालन पूर्ण विश्वास और निष्ठा के साथ करती है। समस्त राज्यसुखों को त्यागकर पति के साथ वन जाने का निर्णय दमयन्ती के त्यागभावना को प्रकट करता है। वन में नल दमयन्ती से पिता के घर जाने का आग्रह करते हैं, तब दमयन्ती कहती है–

''त्वमत्र हिंस्रे वनेऽतिथिः स्थितात्वहं स्यां स्वपितुर्निकेतने''[4]

इन्हीं विशेषताओं के कारण वह भारतीय समाज में त्याग की देवी है। नारी केवल अबला नहीं उसके इसी रुप को कवि ने चित्रित किया है। वन में व्याघ अजगर से दमयन्ती के प्राणों की रक्षा करता है परन्तु बाद में दमयन्ती को प्राप्त करने की लालसा करता है। उसके आग्रह को सुनकर दमयन्ती कहती है –

"न मे सहायः किमिंद विचिन्त्यते विचार्यते वा यदहं कुलाबला।
तस्य सत्यस्य धरा वसुन्धरा विभेति न क्षत्रियवंषपालिका।।"[5]

अर्थात क्या तुम यह सोच रहे हो कि यहाँ कोई मेरी सहायता करने वाला नहीं है और मैं एक अबला नारी हूँ क्या तुम्हें मालूम नहीं कि यह वसुन्धरा धरती और सत्य को धारण करने वाली है और एक क्षत्रिय बालिका किसी से नहीं डरती। दमयन्ती दृढ़संकल्पी तथा आत्मविश्वासी है। राजा नल को खोजने में आये अनेकों संकटों पर वह क्षणभर भी विचलित नहीं होती बल्कि अपने ऊपर आये अनेकों संकटों का दृढ़ता एवं आत्मविश्वास के साथ सामना करती है। महाकाव्य के सप्तम सर्ग में दमयन्ती द्वारा बनायी गयी स्वयंवर योजना इस बात का परिचय है।[6]

दमयन्ती स्त्री समाज के लिये कान्ति और शील का आधार होने के साथ प्रेरणा का स्रोत भी है। दमयन्ती ने राज्य प्राप्ति के बाद नगर में सैकड़ों केन्द्र खुलवाये जहाँ का संचालन महिलाएं करती थीं। राज्य प्राप्ति के बाद निषध देश की उन्नति केलिए निरन्तर कार्यशील रहते हुए दमयन्ती मानव समाज के लिए कर्मयोग की उच्च आदर्श बन गयी। नारी की विद्वता का परिचय देते हुए कवि ने उसे शक्ति, ज्ञान और वैभव तीनों का प्रतीक माना है।

"ये कुटुम्बभरणे पटवस्ते राज्यसिन्धुतरणेऽपि समर्थाः।
तेन भाति गृहशिल्पिनि शान्तिः स्त्रीजनेस्थिरतापि च कान्ति।।"[7]

अर्थात जो कुटुंब का ठीक ढंग से पालन पोषण करने में समर्थ है वे राजकाज भी अच्छी तरह से चला सकते हैं। इसलिए घर को संवारने वाली स्त्रियों के संरक्षण में चलने वाले परिवार में जिस तरह शान्ति, स्थिरता और शोभा देखी जाती है, उसी प्रकार स्त्रियों की व्यवस्था में राजकाज भी शान्तिपूर्वक चल सकता है। वैदिक काल से ऋषि मुनियों ने नारी पूजा का व्यवधान किया। मनुस्मृति में कहा गया है – **यत्रा नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्रा देवताः**[8]

दमयन्ती के चरित्र के समान पतिव्रता, त्याग, साहस, धैर्य, शौर्य आदि गुण जगत के इतिहास में एक साथ मिल पाना कठिन है। इनके चरितगुणों में इतनी अतिशयता है, जिन्हें शब्दों में कह पाना कठिन है। इस प्रकार कवि ने वर्तमान परिपेक्ष में उपयोगी अपने भावों को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जो वर्तमान समाज के लिए नितान्त उपयोगी है। आधुनिक नारी दमयन्ती के चरित्र से शिक्षा ग्रहण करे तो प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने में सफल हो सकती है। आज की परिस्थितियां भिन्न होने के कारण इन की प्रासंगिकता पहले से भी अधिक है। आज भी भारतीय समाज में पतिव्रता नारी में समाज में इनका उच्च स्थान है। इनका चरित्र सीता, सावित्री के समान ही आदरणीय एवं अनुकरणीय है। इनके चरित्र को अपनी लेखनी का विषय बनाकर कवि ने जो अनुपम उदाहरण जगत के समक्ष प्रस्तुत किया है वह भारतीय नारियों के पथ प्रदर्शक है।

सन्दर्भः

1. उत्तरनैषधीयचरितम्, पं0 भैरव गिरी शास्त्री
2. उत्तरनैषधीयचरितम् – 1/25
3. वही 3/129–130
4. वही 1/44
5. वही 1/112
6. वही 9 सर्ग
7. वही 21/109
8. मनुस्मृति